

अथ नमः ॥ मंत्रं पठित्वा ॥ ॐ नमो व पितरो रसायनमो वः पितरः शोषा यनमो वः पि
 तरो जावा यनमो वः पितरः स्वधा ये नमो वः नमो वः पितरो घोरा यनमो वः पितरो
 मन्त्रं वे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृह्यतः पितरो दत्तम तो वः पितरो दे धै त हः
 पितरो वासः आधत ॥ पितरो वरि सुचं रघा तः ॥ नमः नमो वः पितरो गंधादि निरा म्प्य धूप
 दिपै च कारयेत् ॥ मोठका दिक् मोदा यः ॥ ॐ अद्यामु क्तो वा स्म पितर सुक शर्म त्र ता
 नि पितरा वना न्यत्र व्यसूत गन्ध पुष्पा क्षत धूप दीपै क्षवा दिने वै ध्या तिते स्वधा
 ईति गंधा दिक् सुत्सृजेत् ॥ ततो विप्र करे ॐ शिवा व्यापः सन्नि ति ज त न् ॐ

दाय ॥ ॐ अथेत्यादि अमुकगोत्रस्यास्मत्पितु रमुकशर्मराः कृतै तत्सो व
त्सरिकैको दिष्ट आहु पिराहु दानप्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं दक्षिणां रजतं चन्द्रै
वतं नृत्योपकल्पितं द्रव्यं मुकगोत्राया मुकशर्मरा ब्राह्मणाय तुभ्य
महं सम्यग्देईति विप्रकरे उत्सृजेत् ॥ पुनर्दक्षिणा सहितमोढकमादाय ॥
ॐ अथेत्यादि अमुकगोत्रस्यास्मत्पितु रमुकशर्मराः कृतै तत्सो वत्सरिकैको
दिष्ट आहु नृनातिरिक्त परिपूरा र्थं ये देय मन्त्र पानादिकं द्रव्यं यथाना
मदेव तं नाना नाम गोत्रेभ्यो नाना नामशेर्मभ्यो ब्राह्मणेभ्यो ददातु महमुत्सृ

जेत् ॥ ततः ऽपसव्येन ॥ अग्निरस्य तामिति विसृजयेत् ॥ अग्निरस्य
तास्मै ईति प्रविचनम् ॥ ततो ब्राह्मणा दक्षिणां गुह्यं गुह्यं चोत्थाप्य ॥ ॐ
अमावाजस्य तिमंत्रे रात्रा कारिधारया वेष्टनं ॥ ॐ अमावाजस्य षष्ठ्यं सखा
जगं म्यादे मे द्यावा पृथिवि विश्वरूपे ॥ अमा जं ता पितरा मातरा चामासो
मो अमृतत्वेन गम्यत ॥ तत देवताभ्ये ईति जपेत् ॥ ॐ देवताभ्यश्चामहा
यो मिभ्यः स्वतः ॥ नमस्वाहा यै स्रधा येति त्वमेव नमो नमः ॥ ३ ॥ अपसव्येन
दिपाद्या दनं विधाय सव्येन हस्ते पादौ प्रक्षाल्य ऽचमनं विदध्यात् ईति पठे

नृणां यत्कृतं तत्सु कृतमस्तु । यत्र कृतं तद्विष्णोः प्रसादाद्बालरावचना
सर्वं परिपुराणमस्तु ॥ प्रसादात्कुर्वतां कर्मप्रवृत्ताधरेषु च ॥ स्मरणादेव तद्वि
ष्णोः संपूर्णस्याद्विनिश्चुतिः ॥ अयुप्रजापतं विद्या स्वर्गमोक्षं सुषानिचः ॥
प्रयच्छंतु यथा राज्ञं पितरश्चाधतपिताः ॥ २ ॥ कायेन वा वा मनेन
द्विष्टे वा बुद्ध्यात्मना वा कृतिस्वभावात् ॥ करोमि यद्यत्सकलं परस्मै नारा
यणायैति समर्पयामि ॥ १ ॥ अद्य मे सकलं समभवत्पादाज्ज्वलं दनात् ॥
अद्य मेव शंजाः सर्वं याता बोनुग्रहादिवम् ॥ इति श्रावद्विविधिः समाप्तः ॥ अ

एभावीनचविभुमाद्यस्यदार्थहिनेतिषीतंमयात्रतत्सर्वमेतपरि
 परिशोधनियंकोपंनकुप्यीत्स्वतु तेषकस्य॥१॥२॥यादृशिपुस्तकं
 दृष्टानादृशितिविज्ञेयया॥यदिशुद्धमशुद्धोवाममदोषोनदियते॥१॥४
 सप्तमिश्रीसाके१७७५मासे१८९०सा।नमितीचैसषवदि७रोज७शुभ
 हैजानीतीमीतेतमममशुहीऊमप्रार्थ१७७५मसे
 म१८९०सा।नमितीचैसषवदि७रोज७शुभश्रीगारोसायन
 कलजघनचक्रजगज्जटठडठरातथदधनप्रफवममयतनस
 वशहयननननमवागीधरायद्योतायजैकर्मसायनमताये
 जा

ॐ मा गामिति प्रतिवचनम् ॥ ॐ वरुदेयं वनोः स्तु ॥ ॐ अस्तु ॥ ॐ अस्तु ॥
 नो धरु भवेत् ॥ ॐ भवतु ॥ ॐ अतिथिं तमे महि ॥ ॐ लभतु ॥ ॐ वासितारश्च ॥
 सन्तु ॥ ॐ सन्तु ॥ ॐ मायाविष्मकं वन ॥ ॐ मायावेधा ॥ ॐ सततशाय्या
 शिष्टः सन्तु ॥ ॐ सन्तुः ततश्चाद्रु कर्ता ब्रह्मसाहसिततिलकं कुर्यात्
 ॐ यं कामं कामयते सोऽस्मै कामसमृद्धतामिति संज्ञेरातिलकं कुर्यात्
 ॥ ततोऽप्यसर्वे नरिणां जल्लिना ॥ ॐ स्वधां वाचस्पति इति पृक्ष
 तः ॥ ॐ वाचतामिति प्रतिवचनम् ॥ सपिवैत्रकुशादसु अजा

त्रात्समादाय पिण्डोपरिति क्षिपेदनेन ॥ देयं देयं ॥ ॥ ॥

मध्यमत्रुप्रहोमनिकरु कत्राजित पूर्वजादि दह नरु व
 दीयं श्रुय नगवजा मनिउ लनरु नरु वन यं ववर्क
 यं वजीनयापि यात ॥ ॥ ॥ नमयं ववर्ध विष्णुदत्ता
 जीन विष्णु रुतयं वमृनि श्रु वृद्धीपानना वहति
 जीनमानसादत्तं नरु यति मिलयनया नरु य ॥ १॥

ज्ञातवदानेन प्रमादपदि यत्राउ यदीयहिजा नृधा
 नरह्यसनत्राउ पदि वउ विदिगं हवनं वाउ पदि
 पञ्चोखलुपनह ॥ २ ॥ दिलदवलयावियननन
 धित्रयावि य सकञ्ज दल व विद्या २ २ वललाउ
 दिवियसाय यक व का मनी कुल निधि निस्थि न
 व दयति ॥ ३ ॥ गून् वलनति वन साह गति

यलिरा व नामन कू म्र उ दक पत्रि हं ह लि घ
 जा ॥ २ २ वन व वलि ली तथि ह क पत्रि वृत्रि ह व न
 त निधि हं न न ल स नू ह तं ॥ ४ ॥ जगह व वि ॥
 नी श्री नादि व न् व वि दल स न नू ह म ध ग त का दि
 वृत्त ना द नू वि २ ह मित्र ध मित्र न ता ह गा मि नि न

श्री श्री नादी

लनिलसुखयमकृतनादत्रयि॥ ॐ ॥ अनन्तामि
दविश्रीवज्रविनासिनिनिजुवनहनवषमस
नदविश्रीविमानवर्धुजितिकोमत्रयः श्रीहृतसुविश्व
मद्युतनिलप्रति॥ ॐ ॥ वसुधैवकुतूबलधम्यक
रदसदतसंलग्यकृत्तुतिशतदलकमलमहासुख

चक्र हंका न रूप आह न क नाथ ॥ २ ॥ द हति डि न वि आति
त मात द वि ३ व ते मि त धा व घ न द न वि ॥ श्री ॥ दि द स ह
मि श ग त वृ ङ मि डि त ह न व र द अ नि वी न ङ मि ॥ ३ ॥
द र्श न प्र ति वि म्बू ल च द्रा प म ज्ज हि नि शि म ल न व द य
वि र ङ म ङ म म र ङ र ङ पा प्र ह न न द प्र ति ना श न मी ङ प्र

३१५५

दाता ॥ ४ ॥ तठागध्यानाय वक्रदहनपं चण्डामस्र नृविपं
 वहाति परिपाल ॥ ५ ॥ नुमदवी वलिता प्रति नृ वनवी
 ताशिव न मलायक शृमज्जाज्ञानं द ॥ १ ॥ वीर्तवि नृ नृ
 शृद अज्ञानं दं शकलं क मलाशन दृद प्राज्ञानं द ॥ २ ॥ व
 च वृद्ध पं च सुस्थ स नृविश्वं वा शृ न नृ नृ मस्यादि तह

[illegible]

नका वधुप्रसीरुः ॥ नमोऽभिनिद्विनीतवदनी ॥ १ ॥
वामवभादिनीद्वीजातवधुप्रसीरुः ॥ नमोऽभिनिद्विनीतवदनी ॥
विजोतवधुप्रसीरुः ॥ ३ ॥ नमोऽभिनिद्विनीतवदनी ॥
नवधुप्रसीरुः ॥ नमोऽभिनिद्विनीतवदनी ॥
नमोऽभिनिद्विनीतवदनी ॥ नमोऽभिनिद्विनीतवदनी ॥

ॐ नमोऽभिनिद्विनीतवदनी ॥ १ ॥ नमोऽभिनिद्विनीतवदनी ॥
नमोऽभिनिद्विनीतवदनी ॥ नमोऽभिनिद्विनीतवदनी ॥
नमोऽभिनिद्विनीतवदनी ॥ नमोऽभिनिद्विनीतवदनी ॥
नमोऽभिनिद्विनीतवदनी ॥ नमोऽभिनिद्विनीतवदनी ॥
नमोऽभिनिद्विनीतवदनी ॥ नमोऽभिनिद्विनीतवदनी ॥

[illegible]

1158 1159 1160 1161 1162 1163 1164 1165 1166 1167 1168 1169 1170 1171 1172 1173 1174 1175 1176 1177 1178 1179 1180 1181 1182 1183 1184 1185 1186 1187 1188 1189 1190 1191 1192 1193 1194 1195 1196 1197 1198 1199 1200 1201 1202 1203 1204 1205 1206 1207 1208 1209 1210 1211 1212 1213 1214 1215 1216 1217 1218 1219 1220 1221 1222 1223 1224 1225 1226 1227 1228 1229 1230 1231 1232 1233 1234 1235 1236 1237 1238 1239 1240 1241 1242 1243 1244 1245 1246 1247 1248 1249 1250 1251 1252 1253 1254 1255 1256 1257 1258 1259 1260 1261 1262 1263 1264 1265 1266 1267 1268 1269 1270 1271 1272 1273 1274 1275 1276 1277 1278 1279 1280 1281 1282 1283 1284 1285 1286 1287 1288 1289 1290 1291 1292 1293 1294 1295 1296 1297 1298 1299 1300 1301 1302 1303 1304 1305 1306 1307 1308 1309 1310 1311 1312 1313 1314 1315 1316 1317 1318 1319 1320 1321 1322 1323 1324 1325 1326 1327 1328 1329 1330 1331 1332 1333 1334 1335 1336 1337 1338 1339 1340 1341 1342 1343 1344 1345 1346 1347 1348 1349 1350 1351 1352 1353 1354 1355 1356 1357 1358 1359 1360 1361 1362 1363 1364 1365 1366 1367 1368 1369 1370 1371 1372 1373 1374 1375 1376 1377 1378 1379 1380 1381 1382 1383 1384 1385 1386 1387 1388 1389 1390 1391 1392 1393 1394 1395 1396 1397 1398 1399 1400 1401 1402 1403 1404 1405 1406 1407 1408 1409 1410 1411 1412 1413 1414 1415 1416 1417 1418 1419 1420 1421 1422 1423 1424 1425 1426 1427 1428 1429 1430 1431 1432 1433 1434 1435 1436 1437 1438 1439 1440 1441 1442 1443 1444 1445 1446 1447 1448 1449 1450 1451 1452 1453 1454 1455 1456 1457 1458 1459 1460 1461 1462 1463 1464 1465 1466 1467 1468 1469 1470 1471 1472 1473 1474 1475 1476 1477 1478 1479 1480 1481 1482 1483 1484 1485 1486 1487 1488 1489 1490 1491 1492 1493 1494 1495 1496 1497 1498 1499 1500 1501 1502 1503 1504 1505 1506 1507 1508 1509 1510 1511 1512 1513 1514 1515 1516 1517 1518 1519 1520 1521 1522 1523 1524 1525 1526 1527 1528 1529 1530 1531 1532 1533 1534 1535 1536 1537 1538 1539 1540 1541 1542 1543 1544 1545 1546 1547 1548 1549 1550 1551 1552 1553 1554 1555 1556 1557 1558 1559 1560 1561 1562 1563 1564 1565 1566 1567 1568 1569 1570 1571 1572 1573 1574 1575 1576 1577 1578 1579 1580 1581 1582 1583 1584 1585 1586 1587 1588 1589 1590 1591 1592 1593 1594 1595 1596 1597 1598 1599 1600 1601 1602 1603 1604 1605 1606 1607 1608 1609 1610 1611 1612 1613 1614 1615 1616 1617 1618 1619 1620 1621 1622 1623 1624 1625 1626 1627 1628 1629 1630 1631 1632 1633 1634 1635 1636 1637 1638 1639 1640 1641 1642 1643 1644 1645 1646 1647 1648 1649 1650 1651 1652 1653 1654 1655 1656 1657 1658 1659 1660 1661 1662 1663 1664 1665 1666 1667 1668 1669 1670 1671 1672 1673 1674 1675 1676 1677 1678 1679 1680 1681 1682 1683 1684 1685 1686 1687 1688 1689 1690 1691 1692 1693 1694 1695 1696 1697 1698 1699 1700 1701 1702 1703 1704 1705 1706 1707 1708 1709 1710 1711 1712 1713 1714 1715 1716 1717 1718 1719 1720 1721 1722 1723 1724 1725 1726 1727 1728 1729 1730 1731 1732 1733 1734 1735 1736 1737 1738 1739 1740 1741 1742 1743 1744 1745 1746 1747 1748 1749 1750 1751 1752 1753 1754 1755 1756 1757 1758 1759 1760 1761 1762 1763 1764 1765 1766 1767 1768 1769 1770 1771 1772 1773 1774 1775 1776 1777 1778 1779 1780 1781 1782 1783 1784 1785 1786 1787 1788 1789 1790 1791 1792 1793 1794 1795 1796 1797 1798 1799 1800 1801 1802 1803 1804 1805 1806 1807 1808 1809 1810 1811 1812 1813 1814 1815 1816 1817 1818 1819 1820 1821 1822 1823 1824 1825 1826 1827 1828 1829 1830 1831 1832 1833 1834 1835 1836 1837 1838 1839 1840 1841 1842 1843 1844 1845 1846 1847 1848 1849 1850 1851 1852 1853 1854 1855 1856 1857 1858 1859 1860 1861 1862 1863 1864 1865 1866 1867 1868 1869 1870 1871 1872 1873 1874 1875 1876 1877 1878 1879 1880 1881 1882 1883 1884 1885 1886 1887 1888 1889 1890 1891 1892 1893 1894 1895 1896 1897 1898 1899 1900 1901 1902 1903 1904 1905 1906 1907 1908 1909 1910 1911 1912 1913 1914 1915 1916 1917 1918 1919 1920 1921 1922 1923 1924 1925 1926 1927 1928 1929 1930 1931 1932 1933 1934 1935 1936 1937 1938 1939 1940 1941 1942 1943 1944 1945 1946 1947 1948 1949 1950 1951 1952 1953 1954 1955 1956 1957 1958 1959 1960 1961 1962 1963 1964 1965 1966 1967 1968 1969 1970 1971 1972 1973 1974 1975 1

ॐ दिदिवा यद्विनाशमेना ॐ सिव क्रीमावयम् ॥ वायुर्मातस्मादेनसो विश्वामु
भुव ६ हसः ॥ ॐ यदिजाग्रद्यदिस्वप्नना ॐ सिव क्रीमावयम् ॥ सर्वोमातस्मा
देनसो विश्वामुभुव ६ हसः ॥ सर्वेन कुशवयसहितं कर्मपात्रो देवमादाय
ॐ उपवित्रपवित्रोवा सर्वावस्थागतो विवा ॥ यस्मै तुंडरिकाक्षं सर्वाभ्यां
नमः शुचि ॥ ॐ पुरांडरिकाक्षपुनातु रितु त्वाश्वाद्देशद्रव्या राणात्मानं वसिं वे
त्तु त्वादि कमादायः ॥ ॐ अद्येत्यादित्रयमुक्क गोत्रस्यास्मत्पितुरमुक्क शर्मरोग
दोषं न वक्तुं इत्यारिके कोदिष्ट आहु मेमिर्द्वयोरहं इति प्रताडुर्वा

ॐ॥ तत सव्येन देवताभ्य ईति त्रीपटित्का० ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायो
गीभ्यः स्वयं॥ नमस्त्वाहा ये स्वधा ये नित्यमेव नमो नमः॥ ॐ सप्त व्याधा दसार
रापे मृगो कात्तां जिरे गिरी॥ वक्रवाकाः सरदीपे हंसाः सरसि मानसेः ते विजा
ता कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणा वेदपारगाः॥ प्रस्थिता दूरमधानं यं तेभ्यो
वसीदथः॥ आहारं भोग्यां ध्यात्वा देवैर्गदाधरं॥ नोभ्यां वैवने मत्कार
स्ततश्चाहुः समारभ्येत्॥ ततोप सव्येनमः॥ दिग्वचनं कुर्यात्॥ तित्स
हीतमोठकमाशयः तिलान् पूर्वादि क्रमेण वक्ष्यमाणामंत्रैर्विकिरेत्॥

ॐ अग्निष्वात्ता पित्रा गणा प्राविंक्ष्व तु मे दिशं॥ अपहता असुरारक्षा ॐ
सि वेदिषदः॥ ॐ बहिषदपातु याम्यो ये पितरस्थिताः॥ अपहता असुरार
क्षा ॐ सि वेदिषदः॥ प्रचिता माज्यपासा इत् अपहता असुरारक्षा ॐ
सि वेदिषदः॥ ॐ उदि विमपिसोमयाः ॐ अपहता असुरारक्षा ॐ सि
वेदिषदः॥ ततो नावावन्धः॥ ॐ रक्षोभूत पिशाचेभ्यस्तथैवा सुरदोष
तः॥ सर्वतश्चाधिपस्तेषां रक्षां करोतु मे॥ प्रयातु दूरतः सर्वे दैते
यादानवास्तथा॥ सर्वविघ्नोपशान्त्यर्थं क्षिपामि रुक्मास्तित्वा॥ ईति दि

अध्वनं कुयार् ॥ ततः सव्येन विष्णुस्मरणा ॥ अथासनं ॥ अपसव्येन
मौढकमादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य स्मत्पितुरमुकशर्मा इदमौढ
कमासनं तस्वचाः ॥ इति ब्रह्मयमौढकरूपमाशानंदद्यात् ॥ ॐ हस्तार्घ
पात्रमहं करिष्येत् ॥ ॐ पवित्रे स्यौ वैष्णव्यौ सवितुर्वः ॥ ॐ कुरुष्वेत्यनुज्ञा
तसन ॥ पुनः कटमेकमग्रे कृत्वा ॥ तत्र ॐ पवित्रस्य इति मंत्रेणाहं वागं पवित्रं
धारयेत् ॥ ॐ पवित्रे स्यौ वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवउत्पुनाम्यक्षिद्राप
वित्रेणासुर्व्यस्परस्मीमिः ॥ ॐ शत्रो देविरतिमंत्रेणा जेतुं पुटके क्षिपेत् ॥

ॐ शत्रो देविरभिष्टय आघो भवंतु पितयेः ॥ शय्योरभिः श्रवन्तु नः ॥ तिलो
सिति मंत्रेणा तिला क्षिपेत् ॥ ॐ तिलो सिसोमदेव त्यो गोसो नो देवनिर्मि
त ॥ प्रयत्नमहि एतत् स्वधया विदुः तिलो कान्युसाहि न स्वाहा ॥ ॐ श्री
श्रुतेति मंत्रेणा तत्रैव पुष्पाणि क्षिपेत् ॥ श्रीश्रुते तक्षि श्रुपत्स्या बहो
रात्रे पाश्वेन क्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यातम् ॥ इह न त्रिषाराः शुम्भः इषारा
सर्वलोकम् हिषा इषारा ॥ गंधद्वारो मिति मंत्रेणा गंधनि क्षिपेत् ॥ ॐ
गंधद्वारां वुराधर्षा नित्यपुष्टां करिषिषि ॥ इश्वरि सर्वभूतानां तानि

होमयेथा यं॥ॐ हस्ता घर्षपात्रं संपन्नं इति ब्राह्मणं पठेत्॥ॐ सुसंप
 न्नं मेति ते नोक्ते॥ॐ हस्ता घर्षपात्रं उत्थापयामि॥ॐ उत्थापयसेति प्रतिवच
 नान्तरं॥ हस्ता घर्षपात्रं वामहस्ते कृत्वाः॥ॐ पुष्पसहितं पवित्रं गृहीत्वा
 ॥ॐ नमो नारायणायेति मंत्रेण विप्रकरे पुष्पसहितं उत्तराय पवित्रं धृ
 त्वाः॥ वामकरस्थे हस्ता घर्षपात्रं मुखं दक्षिणा करेण पिब्या य॥ॐ यादि
 व्याऽत्रापपयसा संवभृदुर्या तरिक्षाऽउत्तपाथिर्वीर्या हिरापवर्णाय
 जिया स्नानत्रापशिवासऽस्मोना सुहवा भवन्तु॥ जलतिलमोहकमा

दा यः॥ॐ अद्यारे धं दद्यात्॥ अर्घ्यं पुनः प्रत्यर्घ्यमस्तुः तदर्थपात्रं भूमौ
 धृत्वा॥ सडां कृत्वाः तत्र जलनः॥ॐ तत्र क्षुरिति मंत्रेण च क्षुस्पृशेत्॥
 ॐ तत्र क्षुर्देवहितं पुरस्तादुक्तं मुच्यते॥ पश्येमशरदः शत ६ श्रुत्या मश
 रदः शतं मुच्यते मशरदः शतं मदिनाः स्वमशरदः सतमूय मशरदः शतान्तरं॥
 ततोऽपसवेना घर्षपात्रं गृहीत्वा ब्राह्मणस्य वामपार्श्वे॥ॐ विवित्रे स्था नमसीति
 पुञ्जं कुर्यात्॥ तदुपरि कुसुमं दद्यात्॥ ततःॐ अर्चनं ईष्येति ब्राह्मणं पृ
 क्षेत्॥ अर्चनं ईष्येति॥ जलपुष्पक्षततांबूलयस्तोपवितवस्त्रादिभिः

मम अर्चधूपदिपौ वकारयेत् ॥ मोहकादिकमादाय ॥ ॐ अघामुकजो
वास्मत्पितरमुकशर्मनेतार्चनानि अत्र गंधपुष्पाक्षतधूपदीपताम्रता
यसोपवित्तवासांसितेस्वधा ॥ ॐ अचनविधे सर्वपरिपूरामस्तु ईति विप्रक
रेजलंदधात् ॥ ॐ अस्ति तिप्रतिवचनम् ॥ ततो वामवर्त्तेन चतुर्कोरामंडले
विधाय ॥ सक्तेनाचमनं कुर्यात् ॥ ततोपसक्तेन नित्तघृतमधुजलयुत
मन्मोहकादिसहितमादाय दक्षिणाभिमुखो भूत्वा ॥ ॐ ईदमन्नं सजलमे

तद्भस्वामिमितृभ्यो नम ईत्युत्सृजेत् ॥ अथात्र संकल्पः ॥ सोपस्करं नि
लजेत्तद्युतमन्नमुपनियमधुना मिधा वमधो मुषाभ्यां व्यस्ताभ्यां मत्तपा
त्रया लभ्यः ॐ पृथिवितेपात्रं द्यौरपि चानं भ्रातृभ्यां स्वमुखे अमृते अमृ
तं जुहोमि स्वाहा ॥ ॐ ईदं विष्णुरित्यादि सुरे त्वं त्रैलोक्यं पटित्वा ॥ ईदं विष्णुर्वि
चक्रमेतेष्वानि दधे पदम् ॥ समूढमस्य पाण्यं सुरे स्वाहा ईति पटित्वा ॥ वि
प्रदक्षिणां गृह्णहीत्वा ॥ ॐ ईदमन्नमित्येते ॥ ॐ ईदमापः ईनीजले ॥ ॐ ईदं
माज्यं ईति घृते ॥ ईदं हविरिति पुनरन्ने ॥ ॐ एतां न्युपकराणि ईति क्रमे

रागाऽत्र जलादिषु विप्रदक्षिराणां दुष्टनिवेशपात्रे अपहृता असुरारक्षा
 तिवेदिषदईति पटित्वाः अत्रोपरितिलान्विकिर्य मोटकादिभ्यादय
 ॥ वामहस्तांशुः शकुनिमिक मेरात्रमभ्यस्य ॥ ॐ अद्यामुक्तगोत्राया
 स्मिन्निवेऽमुकशर्मसो ईदमन्नं सजलं सोपकृतं परिवेष्टं परिवेष्यमाणा
 दि मक्षयतु प्रिहेतोस्तोस्त्वया इति भूमावेव मोटकादिकमुत्सृजेत् ॥ ॐ अन्नस
 कृत्यसिंस्तु ॥ इति निप्रकरे जलच्छात्र ॥ ब्राह्मणा करे भवन् प्रसईतु न्यपोशा
 नंदत्वा यथासुरं वप्रा प्रसयंतु इति ब्राह्मणं मूयात् ॥ ब्राह्मणाश्च वामेन पाणि

नाऽत्र पात्रमत्यज्यन्मुमियात् ॥ सश्रयति न भक्ष्यप्राथनं कर्तव्यम्
 ॥ तत आधकर्त्ता कुशोपरिविशन् ॥ सव्येन ॥ मधुवाता इति अजं पटि
 त्वां ॐ मधुवाता अतायते मधुक्षरति सिश्वः ॥ माद्वीर्त्रः सत्त्वो पक्षिः ॥
 मधुक्तमुषसो मधुसत्त्वा त्विव ६ रजः ॥ मधुघोरस्तुनः पिता ॥ २ ॥ मधुमा
 त्रो वनस्पतिर्मधुर् ॥ अस्तु सूर्यः ॥ माद्विर्गो भवतु नः ॥ ३ ॥ ॐ मधु ३ ॥
 अन्नं हि न किं याहि न वा विहीने वय इवेत् ॥ तत्सर्वं मद्धि दमस्तु आभा
 स्वरस्य प्रशादत ॥ ॐ नमस्तुभ्य विरूपाक्ष नमोस्ते नैकचक्षुषे ॥ नमः पिनाक

हस्ताय वज्रहस्ताय वै नमः ॥ इति पठेत् ॥ पित्रा सुक्तं त्व पठेत् ॥ अग्रये कव्य
वाहनाय दत्तवे च ॥ इति कृत्वा पुनः पसुराव संवर्ही षट् ॥ ४५ ॥ असुः शि
सानः ॥ ४७ ॥ सहस्त्र सिपा ॥ १६ ॥ नमस्ते सः ॥ ६६ ॥ ब्राह्मणास्य यत्र यत्रो हो
पब्धये ज्ञातव्यं यच्छ मन्त्रं भोजयेत् ॥ ततोऽन्यात्र स त्रिधौ गत्व आस्तम
दक्षिणां प्रभुसत्रं यायां भूमौ विकराशने दत्तात् ॥ अथ सव्ये नः मोहका
दिकमादायः ॥ असंस्कृतप्रणीतानां त्याजिनां कुलयोषितां ॥ उद्दिष्टभाघ
येषां नांदर्भेषु विकर आसनं ॥ इति संज्ञे सा मोहकरस्य मासनं सा स्तत्

कुसोपरिर्गुह्यजेत् ॥ सतिलघृतमत्रमादायजलेनाप्लाव्यमोटकादिकमा
दाय ॥ अग्निदग्धाश्रयेजीवामेवदग्धाबुलेमम ॥ भूमौरतेनहृष्यंतुत
प्रायोनिपरांगतिं ॥ इतिमन्त्रेणास्तुतकुसोपरिअत्रदिकीरेत् ॥ ततकुसा
त्परित्यज्यः हस्तौपादौप्रक्षाल्यसद्योनद्विराचम्यः गायत्रीजपित्वा मधु
घातादित्यद्विराचोपाटः ॥ मधुघातान्नतायतेमधुक्षरं तिसिंधवः ॥ मा
द्वित्रः संतोषधिः मधुनक्तंमुतोषसोमधुमत्पार्थिवदृजः ॥ मधुघ्नो
स्तुनः पिताः २ ॥ मधुमानोवृक्षस्तनिर्मधुमरं ॥ अस्तुसूयः माद्विर्गा

यो भवतु नः ॥३॥ ततो ब्राह्मरां तपसा त्वाः अपसव्येन जलगं इष मि
दं ते ईति ब्राह्मरां य प्रत्य पोशात्रं दद्यात् ॥ अज त्विव द्वि ब्राह्मरां
पृक्षेत् ॥ ॐ त प्रास्यः ॐ त प्रास्य ईति प्रता व चनं ॥ ॐ सेषमंत्रं किं
क्रियतामिति पृष्ठेत् ॥ ॐ ईष्टै सह मुज्यतामिति प्र तिवचनं मः ॥
तत ॐ पिराडा नमहं करिष्ये ईति पृष्ठेत् ॥ ॐ नुरुष्येति प्र तिवचनं
॥ ततो पिराडा नां धरुस्त मितां चतुरङ्गु द्विती सै कती दि की द क्षिराप्ता

वा विरिडु कानिर्मा र्यः तदुपरि ये रूपाणि त्पङ्गारं धामयित्वा दक्षि
रास्यां क्षिपेत् ॥ ॐ ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना असुरा शत्रुः स्वधया चरं ति ॥ परा
पुरो निपुये भरंत्य ग्रेहा लोका त्परा दुदा त्पस्मात् ॥ ततः पिरिडु कामधो वासेन पाणिना
दर्भं पिंजुलं गृह्णित्वा दक्षिरा हस्ते गृह्णित्वा सव्ये पगृह्णित्वा दक्षिरा पाणिना ॥ ॐ अपहृता
असुरारक्षा णं सिवे दिषदः ॥ ईति मंत्रेणाग्रे रे पां हृत्वाः दर्भं पिंजुलिं उत स्यां क्षिपेत् ॥
ततो जलेनः ॐ शत्रो दे वि रिता मंत्रेणा विरिता का से वनम् ॥ ॐ शत्रो दे विर मि ष्टयऽ आपो भ
वतु पित्रये शं यो रभिः श्रवतु नः ॥ तदनु द्वि त्र मूलं बु शान् पिरिडु का यां दद्यात् ॥ तत

सवेनः॥ ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च माहायोगीभ्यः स्वस्वः नमः स्वाहाये स्वधायेति
 त्वमेव नमो नमः॥ इति त्रयवारं पठेत्॥ अपराधो विधाप॥ स्कंदपुटं कं वा महस्ते क
 त्वा मोटकं मादाय ॐ अद्या मुकगोत्रा स्मृतिरमुकशर्म निदं पिराडु स्थानेऽत्रा वनेषि
 क्षिप्तं स्वधा॥ इति हि त्रयमूलं कुशोपरिः अवने जनंदद्यात्॥ मोटकादीना पिराडुं चादा
 य वा महस्ते पुटकादि स्थजलमादायः ॐ अद्या मुकगोत्रा स्मृतिरमुकशर्म त्रेष
 पिराडो मृतस्वरूपो भयत्प्रिहेतोस्ते स्वधा॥ इत्या वने जनोपरि पिराडुं दद्यात्० अ
 त्रभाग विषयः॥ करं पो भ्य कुशान् परित्यज्य॥ सवेनः॥ हिरवम्य हरिं स्मरेत्॥
 जनपात्रः ४

ततः सवेनैव गन्धपुष्पादि न्यादायः॥ पितरमुद्दिश्यः ॐ अत्र पिराडुं तु तं रामि मुखे
 भूत्वा पराश्रयं नियम्यः भास्वरमूर्तिं पितरं ध्यायत् अपसव्यं कृत्वा दक्षिणा वर्तेन
 धाः दक्षिणा मिमुखे भूत्वा॥ ॐ अग्निमदत्त पितरो यथा भागमावपायिषत् इति मंत्रेणा
 पुष्पाक्षतानि पिराडुं परिक्षिपेत्॥ ततो अवने वा महस्ते कृत्वा मोटकादि कमादा
 यः ॐ अद्या मुकगोत्रा स्मृतिरमुकशर्म निदं पिराडुं प्रत्यवने जनं स्वधेति पिराडो
 प्रत्यवने जनंदद्यात्॥ ततो निविविस्त्रं स्पृशं कृत्वा हरिं स्मरेत्॥ अपसव्यं कृत्वा
 नामेरायाशिना धृतं स्त्रवं दक्षिणेनादाय॥ ॐ नमो वः पितरो रसायेत्यादिवास